हम इस्लामी तहरीक के कार्यकर्ता कैसे बनें?

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी
अनुवाद
मुहम्मद आबिद हामिदी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहमवाला है।"

हम इस्लामी तहरीक के कार्यकर्ता कैसे बनें?

आइए वाल पर ग़ौर करने से पहले इसी से सम्बन्धित एक और सवाल पर सोच-विचार कर लें। वह यह कि क्या इस्लाम एक तहरीक (आन्दोलन) है? अगर इसका जवाब हाँ में हो तो ऊपर का सवाल सार्थक होगा वरन् इसके कोई मानी नहीं होंगे। इस्लाम को जब एक तहरीक या आन्दोलन कहा जाता है तो इसका विरोध आधुनिक काल के ध्वजावाहकों की तरफ़ से भी होता है और कुछ धर्मों के धर्मगुरुओं की तरफ़ से भी– आज का दौर इस्लाम को एक मज़हब (धर्म) समझता है और मज़हब के बारे में उसकी कल्पना यह है कि यह पूजा-पाठ और कुछ रिवायतों और रस्मों का मजमूआ (संग्रह) है। जो लोग इसे मानते हैं, इसपर अमल कर सकते हैं, लेकिन ज़िन्दगी के दूसरे मामलों से न तो इसका कोई सम्बन्ध है और न होना चाहिए। आज पूरी दुनिया की सामूहिक और राजनीतिक व्यवस्था इसी कल्पना पर आधारित है कि मज़हब (धर्म) व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है। सामूहिक जीवन इससे अलग रहेगा। मज़हब के बारे में इस रवैये को सही साबित करने के लिए कहा जाता है कि अगर मज़हब दुनिया के सामूहिक कामों और मामलों से सम्बन्धित होगा तो दुनिया फ़ितना-फ़साद का गढ़ बन

जाएगी। लेकिन हैरत है कि यह बात वे लोग कहते हैं जिन्होंने ख़ुद दुनिया को फ़ितना-फ़साद से भर रखा है। इस वक़्त दुनिया में जो बिगाड़ है वह मज़हब (धर्म) का पैदा किया हुआ नहीं है, बल्कि ख़ुदा-बेज़ारी (नास्तिकता) और धार्मिक शत्रुता के ये कड़वे-कसीले फल हैं जो इनसान को चखने पड़ रहे हैं, बल्कि उन्हीं से वह पेट भरने पर मजबूर है।

यह तो है मज़हब के बारे में आधुनिक काल का दृष्टिकोण। इसके साथ कुछ धर्म और उनके धर्मगुरुओं ने भी यह परिकल्पना देने की कोशिश की कि धर्म अस्ल में आत्मा की पवित्रता और/साफ़-सफ़ाई के लिए है। यह उच्च स्थान उस समय तक प्राप्त नहीं हो सकता जब तक कि इनसान दुनिया और उसकी समस्याओं से सम्बन्ध न तोड़ ले और मन और उसकी इच्छाओं को पूरी तरह कुचल न दे। इसके लिए विशेष प्रकार के योग (रियाज़तें) वुजूद में आए, अभ्यास और तजुर्बे होने लगे और रूहानी तरक़्क़ी (आत्म-विकास) के चाहनेवाले दुनिया को छोड़कर पहाड़ों, जंगलों और गुफाओं में चले गए। इससे रहबानियत (संन्यास) का एक पूरा निज़ाम वुजूद में आया। यह निज़ाम (व्यवस्था) आधुनिक काल की धार्मिक कल्पना को ताक़त पहुँचाता रहा, इसलिए इसे फलने-फूलने के अवसर भी मिलते रहे। इस तरह अमलन एक ने एक जज़्बे से और दूसरे ने दूसरे जज़्बे से धर्म को इनसान के सामूहिक जीवन से बेदख़ल कर दिया। इस्लाम को जो हम 'तहरीक' (आन्दोलन) कहते हैं तो इन दोनों नज़रियों (धारणाओं) की तरदीद (खण्डन) करते हैं और इन्हें ग़लत और बातिल (असत्य) क़रार देते हैं।

तहरीक नाम है किसी मक़सद के लिए हरकत और जिद्दोजुहद का। यह मक़सद जिस तरह का होगा उसी तरह की कोशिश होगी। इसे कुछ मिसालों से समझा जा सकता है। इस वक़्त पूरे समाज में बेइमानी और रिश्वत फैली हुई है। मान लीजिए आप इसके ख़िलाफ़ कोई इस्लाही तहरीक (सुधारवादी आन्दोलन) चलाना चाहते हैं तो इसका एक ख़ास मैदान होगा या तालीम (शिक्षा) को आम करने की तहरीक आपके पेशेनज़र हो तो यह काम विशेष सीमाओं के अन्तर्गत होगा अथवा कोई राजनीतिक आन्दोलन चलाना चाहें तो इसका भी एक कार्यक्षेत्र होगा। लेकिन इस्लाम इनसान को पूरी तरह बदल देने का नाम है– उसके व्यक्तिगत जीवन को भी और सामूहिक जीवन को भी। यह संसार का सबसे बड़ा क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जो इनसान को मन और इच्छाओं की ग़ुलामी से, क़ौम और क़बीले की ग़ुलामी से, रस्मों और रिवाजों की ग़ुलामी से, यहाँ तक कि हर छोटी-बड़ी ग़ुलामी से नजात (मुक्ति) दिलाकर एक ख़ुदा का बन्दा और ग़ुलाम और उसके हुक्मों का पाबन्द बनाना चाहता है। इस आन्दोलन का लक्ष्य और गोल (Goal) है–

> "अल्लाह की इबादत करो और ताग़ूत (शैतान)
> की बन्दगी से बचो।" (क़ुरआन, 16:36)

वह इस एलान के साथ आता है, "उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं है।" उसकी माँग है कि "इस्लाम में पूरे-के-पूरे दाख़िल हो जाओ।" वह कामयाबी के लिए अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञापालन) को ज़रूरी क़रार देता है। इस विचारधारा की बुनियाद पर अरब

की सरज़मीन में आज से लगभग साढ़े चौदह सौ साल पहले जो तहरीक उठी उसने पूरे अरब-समाज में एक हलचल पैदा कर दी। उसने मुर्दों को ज़िन्दा किया, सोतों को जगाया, कमज़ोरों को ताक़त प्रदान की, अपाहिजों को चलना सिखाया, जो लोग अपने नफ़्स के बन्दे थे उनको ख़ुदा का बन्दा बनाया, जो अनगिनत ख़ुदाओं की उपासना करते थे उनके सिर सिर्फ़ एक ख़ुदा के सामने झुका दिए, जो अपनी ख़ाहिशों के पीछे चल रहे थे उनको नियमों और सीमाओं के अन्दर रहना सिखाया, जो बेमानी रस्मों-रिवाजों की बन्दिशों में जकड़े हुए थे उन्हें एक जानदार और हमेशा रहनेवाली अमूल्य पाकीज़ा शरीअत (इस्लामी विधान) का ध्वजावाहक बनाया, जो बेमक़सद ज़िन्दगी ग़ुजार रहे थे उन्हें एक स्पष्ट उद्देश्य के तहत जमा किया, इससे एक ऐसी उम्मत (मिल्लत) वुजूद में आई जो इस क्रान्तिकारी विचारधारा को लेकर दुनिया में चारों ओर फैल गई और देखते ही देखते दुनिया के एक बड़े हिस्से पर उसने इस्लाम का झण्डा गाड़ दिया।

इस्लाम ने मानव-जीवन को जिन सीमाओं में रहने का पाबन्द बनाया है, उनका जब वर्णन किया जाता है तो मौजूदा दौर के सामने सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी की मज़हबी बन्दिशें आ जाती हैं, जिनकी वजह से मन और चिन्तन पर ताले लगाने और साइंसी और सांस्कृतिक उन्नति के रास्ते में रुकावटें खड़ी करने की कोशिश की गई और इसके लिए बहुत ही बुरी क़िस्म की हिंसात्मक कार्यवाइयाँ की गईं। यह सब कुछ ईसाइयत के नाम पर उसके ग़लत प्रवर्तकों ने किया। इस मज़म्मत करने योग्य कार्यवाई का इस्लाम से कोई

सम्बन्ध नहीं। उसने अक़्ल और सूझ-बूझ के इस्तेमाल पर कभी पाबन्दी नहीं लगाई बल्कि नए-नए आविष्कार के रास्ते खोले और सभ्यता को आगे बढ़ाया। वह तो इनसान के नफ़्स (मन) और ख़ाहिशों पर पाबन्दी लगाता है, अन्धविश्वासों, ख़ुराफ़ातों और निराधार कल्पनाओं से मुक्ति दिलाता है। ग़लत रस्मो-रिवाज और बेजा बन्दिशों से सुरक्षित रखता है, उसकी पाबन्दियाँ तरक़्क़ी की ज़मानत देती हैं, उसकी राह की रुकावट नहीं बनतीं।

इस्लामी तहरीक धर्म की अचल कल्पनाओं के विपरीत इस्लाम की जो सचल कल्पना पेश करती है, यह उसका हल्का सा परिचय है। अब आइए यह देखें कि आदमी इस तहरीक का कारकुन (कार्यकर्ता) कैसे बनता है? लेकिन यहाँ एक बात को स्पष्ट कर देना मुनासिब मालूम होता है। वह यह कि हर उस आदमी को किसी तहरीक का कार्यकर्ता कहा जा सकता है जो उसके लिए कुछ वक़्त दे, कुछ दौड़-धूप करे और उसके कुछ कामों में सहयोग करे, लेकिन इस वक़्त मेरे सामने मिसाली और आदर्श कार्यकर्ता की कल्पना है। मिसाली कार्यकर्ता वह है जो अपना पूरा जीवन तहरीक के हवाले कर दे, उसी के लिए सोचे, उसी के लिए दौड़-धूप करे, उसी की चिन्ता में तड़पता रहे और तहरीक के फ़ायदे के लिए अपने तमाम फ़ायदों को क़ुरबान कर दे। उसकी जान-माल, शक्ति और कार्यक्षमता सब कुछ तहरीक के लिए वक़्फ़ हो जाए। हो सकता है कि आप उसके लिए कार्यकर्ता की परिभाषा को हल्की समझें और कोई दूसरी परिभाषा सुनिश्चित करें, लेकिन मेरे ख़याल में

तहरीक की बड़ी-से-बड़ी ख़िदमत अंजाम देनेवाला भी उसका कार्यकर्ता ही होता है।

तहरीक के कार्यकर्ता को आदर्श कार्यकर्ता बनने की कोशिश करनी चाहिए। उसके अन्दर यह तमन्ना, यह भावना और यह तड़प होनी चाहिए कि वह तहरीक का एक आम कार्यकर्ता ही नहीं बल्कि आदर्श कार्यकर्ता बनकर रहेगा और तहरीक की बड़ी-से-बड़ी ख़िदमत अंजाम देगा।

उस तहरीक का आदर्श और मिसाली कार्यकर्ता बनने के लिए आदमी को बहुत अधिक तैयारी करनी होगी और अपने अन्दर विशेष ख़ूबियाँ पैदा करनी होंगी। यहाँ उन्हीं ख़ूबियों को बयान किया जा रहा है।

(1) जो आदमी इस्लामी तहरीक का आदर्श कार्यकर्ता बनना चाहता हो उसके लिए सबसे पहले यह ज़रूरी है कि इस्लाम का गहरा ज्ञान प्राप्त करे, उसे अच्छी तरह समझे, उसके आदेशों और उद्देश्यों से अच्छी तरह बाख़बर हो और उसकी रूह (आत्मा) और मिज़ाज को अपने अन्दर समाहित कर ले। उसका यह ज्ञान और जानकारी इतनी बढ़ जाए कि उसे इस्लाम की सत्यता पर पूर्ण आत्मविश्वास प्राप्त हो जाए, उसके अन्दर से यह यक़ीन उबल रहा हो कि सिर्फ़ इस्लाम ही के दामन में नजात मिल सकती है। वह दिन के उजाले में देख रहा हो कि दुनिया झूठे दृष्टिकोणों की आग में जल रही है और ग़लत अख़लाक़ और कर्मों ने उसको मौत के मुँह तक पहुँचा दिया है। दुनिया की कोई धारणा उसके विश्वास को हिला न सके कि उसके पास सत्य का प्रकाश है और

अन्धकार में पड़ी हुई दुनिया को वह सत्य का मार्ग दिखा सकता है। ख़ुदा के रसूल जिन्होंने कुफ़्र (नास्तिकता) और अंधकार से दुनिया को पाक-साफ़ किया, उन्हें अल्लाह के दीन पर इसी तरह आत्मविश्वास होता था, इसी आत्मविश्वास के बाद वे इस पोज़ीशन में होते थे कि उस भारी बोझ को उठा सकें जो पहाड़ पर रख दिया जाए तो चूरा-चूरा हो जाए और ज़मीन पर डाल दिया जाए तो ज़मीन का सीना फट जाए। क़ुरआन मजीद में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को सम्बोधित करके कहा गया है कि दीन फैलाने की भारी ज़िम्मेदारी ने आप (सल्ल॰) की कमर तोड़ रखी थी लेकिन अल्लाह ने आपको आत्मविश्वास की दौलत प्रदान की, जिसकी वजह से इस रास्ते पर अटल रहना और इसके लिए कठिनाइयों को सहन करना आप (सल्ल॰) के लिए आसान हो गया।

> "क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल नहीं दिया और तुमपर से वह भारी बोझ नहीं उतार दिया जो तुम्हारी कमर तोड़े डाल रहा था और तुम्हारी ख़ातिर तुम्हारे ज़िक्र की आवाज़ ऊँची कर दी।"
>
> (क़ुरआन, 94:1-4)

यह अल्लाह का फ़ज़्ल और करम है कि हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं जिसमें इस्लाम का नाम लेने में बहुत-सी वे रुकावटें नहीं हैं जो किसी ज़माने में थीं। इसके साथ यह भी अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है कि इस्लामी तहरीकें दुनिया के कोने-कोने में इस्लाम की वकालत और व्याख्या का फ़र्ज़

अन्जाम दे रही हैं। इन तहरीकों ने बेहतरीन ढंग और शैली में दीन को समझाने की ख़िदमत अन्जाम दी हैं और दे रही हैं। यूँ महसूस होता है कि बहुत-से लोगों ने इन तहरीकों की विचार-धारा, इनकी ज़बान और इनकी परिभाषाओं को तो अपना लिया है लेकिन उनकी मानवियत (अर्थवत्ता) और तक़ाज़ों को वे पूरी तरह अपने दिल-दिमाग़ में नहीं उतार सके हैं। इन तहरीकों के प्रभाव के तहत यह कहना आसान है कि इस्लाम एक पूर्ण जीवन-व्यवस्था है, लेकिन इस गुत्थी को खोलना आसान नहीं है। इन तहरीकों ने इस हक़ीक़त का खुल्लम-खुल्ला इज़हार किया कि इनसान के चरित्र का निर्माण, समाज का गठन और राष्ट्र की स्थापना सही लाइनों पर इस्लाम ही के ज़रीए हो सकती है। इसलिए इसी को ज़िन्दगी के हर पहलू पर हुक्मरानी का हक़ हासिल है। आपको ऐसे लोग मिलेंगे जो इन तहरीकों से सम्बन्ध रखने की बिना पर इस क्रान्तिकारी विचारधारा की चर्चा तो करते हैं लेकिन इसके ख़तरों और पेचीदगियों को पूरी तरह जानते नहीं हैं। इन तहरीकों ने बताया कि इस्लाम आस्था, चरित्र, सामाजिकता, आर्थिकता और राजनीति के लिए बेहतरीन उसूल फ़राहम करता है। दीन और दुनिया की सारी समस्याओं को अच्छे ढंग से हल करता है। इसलिए अक़्लमन्दी का तक़ाज़ा यह है कि जीवन के सारे के सारे विभाग उसी के अधीन हों और शासन और हुकूमत सिर्फ़ उसी की तस्लीम की जाए। लेकिन ऐसे लोग कम मिलेंगे जो इस विचारधारा से सहमति के बावुजूद जीवन के किसी एक भाग में इस्लाम की बरतरी साबित कर सकें।

इसमें शक नहीं कि तहरीक में आम लोग भी होते हैं और ख़ास भी, इसलिए तहरीक के हर व्यक्ति से इस वैचारिक बुलन्दी की आशा नहीं की जा सकती। ख़ास लोगों का स्थान नेतृत्त्व और रहनुमाई का है, अवाम पीछे चलते हैं। इल्म (ज्ञान) के बग़ैर नेतृत्त्व का अहम पद प्राप्त नहीं हो सकता। नारे और दावे जनता के लिए होते हैं। ज्ञानी दुनिया को इनकी सार्थकता समझाते हैं। इस्लामी-तहरीक के मिसाली कारकुन (कार्यकर्ता) को विद्वानों की पंक्ति में नज़र आना चाहिए। इसके लिए इस्लाम के गहन अध्ययन की ज़रूरत है। इस अध्ययन के दो पहलू हैं।

(1) एक तो यह कि इस्लाम का सरसरी अध्ययन हो और आदमी उसके बुनियादी मसलों और आदेशों और उसके अभिप्राय से इस हद तक वाक़िफ़ हो जाए कि वह उसका संक्षिप्त परिचय करा सके। इस्लामी तहरीक के कार्यकर्ता के लिए इस हद तक इस्लाम का मुताला (अध्ययन) बेहद ज़रूरी है। इससे ग़फ़लत किसी हाल में नहीं होनी चाहिए। दूसरा पहलू यह है कि इस्लाम का विशेष अध्ययन किया जाए। इससे मेरी मुराद ऊँची क़ाबलियत और गहरी समझ-बूझ पैदा करना है। इसमें शक नहीं कि इस्लाम के तमाम पहलुओं पर इस प्रकार का अध्ययन विशेष रूप से मौजूदा दौर में बहुत कठिन, बल्कि शायद असंभव है। अलबत्ता इस्लाम के साधारण अध्ययन के साथ उसके किसी एक पहलू पर हमारे मिसाली कार्यकर्ताओं को ज्ञानात्मक आदर्श की तैयारी करनी चाहिए ताकि वे विस्तार के साथ इस्लाम के उस पहलू पर अपने विचार प्रकट कर सकें और उसके एक-एक बिन्दु पर

दुनिया को मुत्मइन (संतुष्ट) कर सकें। ज़ाहिर बात है इसके लिए बहुत अधिक मेहनत की ज़रूरत है। इस वक़्त मेरा सम्बोधन विशेष रूप से उन नौजवानों से है जो ज्ञान के विभिन्न मैदानों में काम पर रहे हैं। उनसे यह दरख़ास्त बेजा न होगी कि वे इस तैयारी से ग़ाफ़िल न हों। एक विद्यार्थी से ज्ञान ही से सम्बन्धित बातचीत हो सकती है। अगर वह ज्ञान के मैदान में असफल रहा तो यह उसकी इतनी बड़ी हानि होगी कि शायद किसी और तरीक़े से वह उसकी क्षतिपूर्ति न कर सके।

(2) दूसरे किसी तहरीक का कार्यकर्ता उसका परिभाषक (तर्जुमान) होता है। इस्लामी तहरीक के कार्यकर्ता को भी उसका तर्जुमान होना चाहिए। यह तर्जुमानी (परिभाषिता) उसे जनसाधारण और विशेषजनों में, मस्जिदों और मदरसों में, स्कूल और कालेजों में, बाज़ारों और पार्कों में, बड़े और छोटे मजमों में, ग़रज़ हर स्थान और हर जगह करनी होगी और अपनी बातचीत से, भाषण और लेखन से, पत्रकारिता से, वार्तालापों और वाद-विवादों से यानी हर उस ज़रीए से करनी होगी जो उसके वश में हो और जो उस तहरीक के स्वभाव से समानता रखता हो। आप हर मैदान में इस्लाम के वकील (वक्ता) और परिभाषक बनकर नज़र आएँ, दुनिया की हर बहस का रुख़ उसकी तरफ़ मोड़ दें, हर चैलेंज का जवाब आपके पास मौजूद हो और हर उलझन को आप उसकी रौशनी में हल कर सकते हों। यह एक लम्बा अमल है जो उस वक़्त तक चलता रहेगा जब तक कि दुनिया इस्लाम में दाख़िल न हो जाए और हर तरफ़ उसका बोल-बाला न होने

लगे, यही बड़ी जंग आपको जीतनी है। सोचिए, क्या आप इसके लिए तैयार हैं?

(3) तीसरे, इस्लामी तहरीक का कार्यकर्ता वह है जिसका पूरा जीवन उस तहरीक के समरूप हो। वह जो कुछ स्टेज पर नज़र आता है वही अपने निजी जीवन में नज़र आए। उसका चरित्र, उसके कर्म, उसके सम्बन्ध और उसके मामलात सब कुछ उस तहरीक से अनुरूपता रखते हों। जिस व्यक्ति के अन्दर यह ख़ूबी न हो वह उसकी ख़िदमत तो क्या करेगा बल्कि उसकी बदनामी और रुसवाई का कारण होगा। करनी और कथनी में विरोधाभास हर तहरीक को नुक़सान पहुँचाता है। इस्लामी तहरीक के लिए भी यह घातक है। इस्लामी तहरीक से जुड़े किसी नौजवान के लिए इस बात का बड़ा महत्व है कि उसका चरित्र उस तहरीक के समरूप हो। आज के दौर में जबकि हमारे देश के, बल्कि दुनिया भर के, नौजवान मानसिक बिगाड़ का शिकार हैं, उनके जीवन-चरित्र और नैतिकता को घुन लग गया है, वे बेशुमार ग़लत कामों में फँसे हुए हैं, इनकी वजह से हँगामे हैं, तोड़-फोड़ है, कुचरित्रता के प्रदर्शन हैं, व्यभिचार और बदकारी है, उनके अन्दर से बड़ों का अदब ख़त्म हो चुका है, तालीम से उनका लगाव बाक़ी नहीं रहा, उनका अधिकांश समय ग़लत और बेकार के कामों में बीत रहा है, उनकी वजह से उनके माँ-बाप परेशान हैं, पास-पड़ोस और मुहल्ले के लोग भी परेशान हैं, यहाँ तक कि पूरा देश परेशान है। इस माहौल में अगर कोई नौजवान इस्लाम की सही तस्वीर पेश करे, वह सुचरित्र हो, बड़ों का अदब करनेवाला हो, छोटों को उससे

तकलीफ़ न पहुँचे, उसके चाल-चलन से माँ-बाप, रिश्ते-नातेदार और मिलने-जुलनेवाले सभी ख़ुश हों तो उसकी बेज़बानी भी ज़बान बन जाएगी और उसकी ख़ामोशी में भी बोलने की ताक़त (वाक्शक्ति) होगी। वह स्टेज पर गए बिना भी मंच पर रहेगा। उसकी बातें कानों के पर्दों से टकराकर नहीं लौट आएँगी बल्कि दिलों और दिमाग़ों की गहराइयों में उतर जाएँगी। उसका वुजूद ख़ुद इस बात की दलील बन जाएगा कि वह हक़ पर है और हक़ की तरफ़ दुनिया को बुला रहा है। सोचिए, क्या कोई कार्यकर्ता इतने बड़े हथियार से वंचित हो सकता है?

(4) चौथे, अल्लाह ने इनसान को बहुत-सी सलाहियतें (क्षमताएँ) प्रदान की हैं। एक नौजावन तो इन क्षमताओं से मालामाल होता है। बल्कि यूँ कहना चाहिए कि वह अनमोल और बहुमूल्य कुशलताओं और क्षमताओं का एक ख़ज़ाना लिए फिरता है। इनसे वह बिगाड़ के भी काम कर सकता है और अच्छाई के कामों को भी अन्जाम दे सकता है। आप इस्लामी तहरीक के कार्यकर्ता हैं। आपके पास शक्तियों और क्षमताओं का जो ख़ज़ाना है उसे इसी तहरीक की ख़िदमत में लगाइए। आप जानते हैं कि आपकी ये क्षमताएँ और शक्तियाँ ख़ुद-बख़ुद आपको नहीं मिल गई हैं। ये अल्लाह की अमानत हैं। इनके बारे में क़ियामत के दिन सवाल होगा। आपके पास इल्म (ज्ञान) है तो इस इल्म के बारे में सवाल होगा, आपको जवानी मिली है तो इस जवानी के बारे में सवाल होगा, आपको जो जीवन, समय और माल-दौलत हासिल है इसके सम्बन्ध में भी पूछ-गछ होगी। हदीस में आया है–

"क़ियामत के दिन इनसान के क़दम नहीं हट सकते जब तक कि उससे पाँच सवाल न हो जाएँ और वह उनका जवाब न दे दे— उसने अपनी उम्र कैसे गुज़ारी, अपनी जवानी किस तरह ख़त्म की, जो इल्म हासिल किया उसके मुताबिक़ किस हद तक अमल किया, अपना माल कहाँ से हासिल किया और उसे कहाँ ख़र्च किया?"

(हदीस : तिरमिज़ी)

आपको जो क्षमताएँ मिली हैं इस तहरीक को उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है। वह ग़ौर से देख रही है कि आपकी ये क्षमताएँ उसके काम आ रही हैं या नहीं? हो सकता है कि दुनिया के बाज़ार में आपकी इन सलाहियतों की अधिक क़ीमत मिले और तहरीक उनकी कोई क़ीमत न अदा कर सके। लेकिन सिर्फ़ इस वजह से कि बाज़ार में इनकी क़ीमत ज़्यादा है आप इनको नीलाम न कर दें। यह दुनिया और दुनिया का सामान बे-हक़ीक़त है और आपकी कार्य-क्षमताएँ, सच जानिए, इतनी क़ीमती हैं कि वे यहाँ के खर-पतवारों के बदले नहीं बेची जा सकतीं। ये यहाँ के हीरे-जवाहरातों से भी नहीं तोली जा सकतीं, इनकी क़ीमतों का आज आप अन्दाज़ा भी नहीं कर सकते। इसकी सही क़ीमत उस समय मालूम होगी जबकि अल्लाह के यहाँ इसका बदला मिलेगा। आप इतना पाएँगे कि इस दुनिया की हर महरूमी का एहसास ख़त्म हो जाएगा और हर चाहत और तमन्ना पूरी हो जाएगी।

यह तहरीक किसकी है? यह आप ही की है, आप इसके हाथ-पैर हैं, आप आनेवाले कल के रहनुमा हैं, जिनपर इसके चलाने की ज़िम्मेदारी आएगी। आप वे हैं जिनके हवाले आगे चलकर यह अमानत कर दी जाएगी। ज़रा सोचिए, कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी आपपर आनेवाली है। याद रखिए, दुनिया का भविष्य इस तहरीक से जुड़ा है। यह तहरीक हर तरफ़ छा जाने के लिए उठी है। और अल्लाह ने चाहा तो छाकर रहेगी। दुआ करता हूँ कि इसका झण्डा हमारे हाथों में हो और हमारे ज़रीए यह कारनामा अन्जाम पाए।



दीन क़ायम करने के लिए इल्मी तैयारी की अहमियत

इस्लाम एक जीवन-व्यवस्था है। यह सम्पूर्ण जीवन में हमारा नेतृत्व करता है। दुनिया की सारी व्यवस्थाएँ ग़लत और असत्य हैं। इस्लाम के माननेवालों की यह ज़िम्मेदारी है कि उन व्यवस्थाओं को ख़त्म करके अल्लाह की इस ज़मीन पर उसकी इस जीवन-व्यवस्था को क़ायम और ग़ालिब करें, यही इक़ामते-दीन (दीन का क़ायम करना) है।

एक ज़माना था, ज़्यादा दूर का नहीं, क़रीब का कहना चाहिए, दीन क़ायम करने की कल्पना में बड़ी विचित्रता थी। ग़ैरों की बात ही क्या अपने भी हैरत और ताज्जुब से उसे देखते और सुनते थे लेकिन अब उस कल्पना में पहली सी विचित्रता नहीं रही। निकट भूतकाल की यह नामानूस और अजनबी आवाज़ आज दुनिया की अनेकों जगहों से बुलन्द हो रही है। यह तराना लोगों की ज़बानों पर भी है और उसके आस-पास लोग अलग-अलग नामों से जमा भी हो रहे हैं।

दीन क़ायम करना सिर्फ़ एक जज़्बाती (भावनात्मक) नारा नहीं है, उसे बुद्धि और विवेक से ख़ाली, वक़्ती जोश और उत्साह का प्रदर्शन भी नहीं कहा जा सकता। यह भूतकाल को जीवित करने की झूठी तमन्ना और आरज़ू भी नहीं है, बल्कि यह झूठी धारणाओं और विचारों की आग में जलती हुई दुनिया को सत्य-धर्म की शीतल छाया में लाने की एक संजीदा और संगठित कोशिश है।

दीन क़ायम करने की संगठित कोशिश किस वक़्त, कहाँ और किन हालतों में शुरू हुई, इसका क्या इल्मी सरमाया (पूँजी) था और इसमें कब और कितनी बढ़ोत्तरी हुई; इसकी क़द्र व क़ीमत में परिस्थितियों की तब्दीली से कोई फ़र्क़ आया या नहीं? इन सब सवालों से इस वक़्त बहस नहीं है, अलबत्ता यह एक वाक़िआ है कि इस देश में दीन क़ायम करने (धर्म-स्थापना) की कोशिश का आरम्भ इस तरह हुआ कि इसके पीछे चिन्तन और दर्शन था, मज़बूत दलीलों (प्रमाण) और तर्क की ज़बरदस्त ताक़त थी। इस वजह से इसने बहुत-से सोचनेवाले ज़ेहनों को अपनी ओर खींच लिया और वे इसको लेकर आगे बढ़ने लगे। लेकिन अब यूँ महसूस होता है कि जिस इल्मी तैयारी के साथ उस सफ़र का आरम्भ हुआ था उसमें कोई बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है, जबकि इस मुद्दत में यह तैयारी हर पहलू से और बेहतर होनी चाहिए थी। यह हक़ीक़त है कि उस अस्ल मक़सद के हक़ में जो दलीलें एकत्र की गई थीं उनसे भी जानकारी कम होती जा रहीं है, कम-से-कम इतनी बात शायद ग़लत न होगी कि ये दलीलें अब दिमाग़ों में ताज़ा नहीं रहीं। इल्मी मसलों और बहसों से जैसे जी घबराता हो और दामन बचाकर हम उनसे आगे बढ़ जाना-चाहते हों। कभी-कभी ख़याल होता है और यह ख़याल बेबुनियाद नहीं है कि दीन क़ायम करने की कोशिश के लिए इल्मी और फ़िक्री (वैचारिक) तैयारी की अहमियत ही निगाहों से ओझल होती जा रही है और यह एहसास भी बहुत-से मसलों और कामों के बोझ तले दब-सा गया है कि अज्ञानतापूर्ण संसाधनों के साथ यह कठिन

जंग जीती नहीं जा सकती। हालाँकि किसी दृष्टिकोण को अपनाना और उसपर मज़बूती के साथ जमे रहना बड़ा जान-जोखिम का काम है। इसका साहस, हिम्मत, ताक़त और क्षमता ज्ञान ही से पैदा होती है।

यह दुनिया नज़रियों और धारणाओं का एक जंगल है। आदमी इल्म ही की बुनियाद पर उनमें से किसी का चयन करता है। जब उसका इल्म पक्का होकर ईमान में बदल जाता है तो उसके अन्दर पहाड़ की-सी साबित-क़दमी और दृढ़ता पैदा हो जाती है और वह निर्भीक होकर किसी भी परीक्षा की किसी भी आग में कूद पड़ने के लिए तैयार हो जाता है। इल्म न हो तो आदमी किसी एक निश्चित दृष्टिकोण पर जम नहीं सकता। विपरीत विचारों का एक ही रेला उसे अपने साथ बहा ले जाएगा। तनिक एक क़दम और आगे बढ़कर एक दाई (आह्वानकर्ता) की हैसियत से सोचिए तो इल्म की ज़रूरत और महत्व बहुत बढ़ जाता है। इल्म एक दाई की प्रारम्भिक और बुनियादी ज़रूरत है, इसलिए कि इल्म ही से दावत के काम का आरम्भ होता है। किसी नज़रिए (धारणा) को दुनिया के सामने पेश करने और उसे अपनाने की दावत देने के लिए ज़रूरी है कि आदमी उस नज़रिए को न सिर्फ़ यह कि अच्छी तरह समझता हो जिसकी वह दावत दे रहा है, बल्कि इसके साथ उन इल्मी और फ़िक्री बुनियादों को भी उसे जानना चाहिए जिनपर वह धारणा आधारित है। इस राह में जितना इल्मी सरमाया दाई के पास होगा उतना ही वह आगे बढ़ेगा और जहाँ यह सरमाया ख़त्म होगा उसका आगे बढ़ना रुक जाएगा। बल्कि इस बात का भी डर है कि

वह इस सफ़र ही से वापस न लौट आए और बहुत थक-हारकर बैठ जाए। इल्म की थोड़ी-सी पूँजी से दावत का परचम लहराना और लम्बा सफ़र तै करना चमत्कार है, और चमत्कार हमेशा ज़ाहिर नहीं होते।

किसी को हमसे, आपसे, अक़ीदत (आस्था) और मुहब्बत हो तो मुमकिन है कि वह हमारी बात बे-दलील भी मान ले, लेकिन दुनिया का आम क़ायदा यही है कि दावा दलील (प्रमाण) से माना जाता है। दावा जितना बड़ा होता है उसके लिए उतनी ही बड़ी दलील की ज़रूरत होती है। दावत और तबलीग़ (प्रचार-प्रसार) के लिए दाई की इल्मी सतह मुख़ातब (सम्बोधित) की इल्मी सतह के बराबर, बल्कि उससे बढ़कर, होनी चाहिए। थोड़ी-बहुत मालूमात के ज़रीए अनपढ़ या कम पढ़े लिखे लोगों के बीच तो किसी न किसी दर्जे में दावती काम किया जा सकता है, लेकिन पढ़े-लिखे लोगों को सम्बोधित करने के लिए उसी अनुपात से इल्मी तैयारी करनी होगी। इसके लिए उसी पैमाने के प्रमाण जुटाने होंगे और वर्णनशैली भी उतनी ही इल्मी (ज्ञानपूर्ण) अपनानी होगी। किसी पढ़े-लिखे व्यक्ति को दाई अपनी कमतर इल्मी सतह पर लाकर बात नहीं कर सकता, इसके लिए ख़ुद उसे उठकर अपने सम्बोधित की सतह पर पहुँचना होगा। इसके बग़ैर वह उसकी वैचारिक महानता को कभी नहीं महसूस करेगा और उसकी बातों को इस क़ाबिल नहीं समझेगा कि उनकी तरफ़ ध्यान दिया जाए।

हमारी इल्मी तरक़्क़ी की राह में एक बड़ी रुकावट शायद यह भी रही है कि हमने इल्मी लिहाज़ से कमतर दर्जे के लोगों को अपना सम्बोधित बनाना शुरू कर दिया। उच्च शिक्षित वर्ग तक पहुँचने की कोशिश नहीं की। इनसान अपने से कमतर दर्जे के लोगों को लाजवाब करके इल्म के फ़रेब में मुब्तला हो जाता है। वह समझता है कि यही सारी दुनिया की ज़ेहनी सतह है और वह अपनी दलीलों के ज़ोर से हर एक को हरा सकता है। यहीं से उसका इल्मी ज़वाल (ज्ञानात्मक पतन) होने लगता है। इल्मी तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है कि आदमी उन लोगों से सम्बोधन (ख़िताब) की तैयारी करे जो इल्म व फ़िक्र में उससे ऊँची हैसियत के मालिक हैं। दाई को अपने सम्बोधित लोगों के बीच वैचारिक लिहाज़ से इतने ऊँचे और सुरक्षित स्थान पर होना चाहिए कि उसपर किसी तरह से हमला करना आसान न हो और वह चारों ओर अपना आक्रमण जारी रख सके। इस वैचारिक दृढ़ता के बग़ैर दुनिया में कोई भी फ़िक्री और ज़ेहनी इंक़िलाब नहीं आ सकता।

सवाल यह है कि जो ज्ञानात्मक वातावरण हमने बनाया था अब वह क्यों बदल गया और जो वैचारिक रुझान पैदा किया था वह कमज़ोर क्यों पड़ गया?

इसके जवाब में कहा जाता है कि हमने अपने सफ़र के आरम्भ में कुछ अहम इल्मी और वैचारिक विषयों से बहस की। वर्तमान युग ने जो सवाल छेड़े थे उनके उत्तर दिए और इल्मी दुनिया में पाई जानेवाली ग़लतफ़हमियों को दूर करने

की कोशिश की, लेकिन यह सिलसिला ज़्यादा दिनों तक जारी नहीं रहा सका, नए-नए विषयों को हम नहीं अपना सके और पिछली विषय-सामग्री ही को दोहराने, उसे आसान करने और उसकी व्याख्या और विस्तार करने में लग गए, विषय-सामग्री की पुनरावृत्ति इतनी ज़्यादा होने लगी कि पढ़नेवालों में उकताहट पैदा हो गई। इस तरह जो इल्मी रुझान पैदा हुआ था जब उसे मुनासिब विषय वस्तु नहीं मिली और उसके विकास और परवरिश का सामान नहीं मुहैया किया गया तो वह मुरझाकर रह गया।

यह बात बड़ी हद तक सही है कि इल्मी मैदान में जो चौमुखी जंग हमने छेड़ी थी वह जारी नहीं रह सकी और जिस तेज़ी से हम आगे बढ़ रहे थे उसमें फ़र्क़ आ गया। उसके कारण हमें अवश्य मालूम करने चाहिएँ और उन्हें दूर करने की नए सिरे से और नए उत्साह और हौसले से कोशिश भी होनी चाहिए। अपनी सुस्त चाल के इस एतिराफ़ (स्वीकृति) के बावजूद यह कहने में भी कोई संकोच नहीं है कि इस दौरान में बिल्कुल ही इल्मी ख़ला नहीं रहा है। कुछ नए विषयों पर भी वैचारिक बहसें आई हैं, प्राचीन विषयों पर नई विषय-सामग्री भी पेश की गई है, जिन मसलों पर सिर्फ़ संक्षेप में इशारे किए जा सके थे उनकी विस्तृत व्याख्याएँ की गई हैं और जो बातें दलीलों की मुहताज थीं उनको दलीलों के साथ खोल-खोलकर बयान किया गया है, और जिन पहलुओं को अधिक नुमायाँ और उजागर करने की ज़रूरत थी उनको नुमायाँ किया गया है। उनके अध्ययन से कुछ नए उफ़ुक़ (क्षितिज) उभर कर सामने आए हैं, जिन पहलुओं की

तरफ़ ध्यान नहीं था या कम था उनकी तरफ़ ध्यान दिया गया है और सबसे बड़ी बात यह कि इल्मी भरोसा पैदा हुआ है। इस काम को नज़रअन्दाज़ करना और इससे ठीक तौर पर फ़ायदा न उठाना एक तरह का इल्मी नुक़सान है। दीन का काम करनेवालों को किसी क़ीमत पर यह नुक़सान सहन नहीं करना चाहिए।

कभी-कभी इस तरह का रुझान भी सामने आता है कि इस्लाम को इल्मी और फ़िक्री तौर पर तो साबित किया जा चुका है, अब सिर्फ़ अमलन उसे क़ायम करने का काम रह गया है, लेकिन ऐसा सोचना ग़लत है। यह दुनिया विरोधी विचारों की आमाजगाह (लक्ष्य-स्थान) है। विचारों की लड़ाई बड़ी सख़्त होती है जो एक बार की सफलता के साथ ख़त्म नहीं हो जाती, बल्कि यहाँ हर दिन नए हमले होते रहते हैं। किसी भी दृष्टिकोण को ज़िन्दा रहने के लिए अपने वुजूद ही का नहीं अपनी ताक़त और तवानाई का मुसलसल (निरन्तर) सुबूत फ़राहम करना होता है। जो धारणा क़दम-क़दम पर यह साबित न कर सके कि वह दूसरी धारणाओं पर ग़ालिब आ सकती है, विरोधी धारणाएँ आसानी से अपनी पराजय का एलान करके उसकी हुकूमत और बादशाहत को कभी क़बूल नहीं करेंगी। बहुत-सी धारणाएँ इस दुनिया में उभरती रही हैं। लेकिन जब धारणाओं की कश-म-कश में वे पराजित हो गए तो उन्हें बेजान और मुर्दा समझकर इतिहास के पन्नों में दफ़्न कर दिया गया। यहाँ किसी भी धारणा का ध्वजावाहक हर समय वैचारिक कश-म-कश से दोचार रहता है। वह एक क्षण के लिए इससे गाफ़िल हो जाए तो विरोधी

धारणाओं के लिए उसे मैदान ख़ाली करना पड़ेगा। इतिहास इस मामले में बड़ा बेरहम साबित हुआ है। न पहले इसने किसी के साथ तरफ़दारी की और न अब करेगा।

हक़ीक़त यह है कि हम जो वैचारिक जंग जीतना चाहते हैं उसके लिए भरपूर इल्मी तैयारी की ज़रूरत है। यह तैयारी मज़हब, फ़ल्सफ़ा, अख़लाक़ और क़ानून आदि बहुत-से पहलुओं से होनी चाहिए। इस वक़्त सिर्फ़ यह अर्ज़ करना है कि ग़लत-से-ग़लत और बातिल-से-बातिल धारणा भी इल्म के ज़ोर और ताक़त से कभी-कभी छा जाते हैं, और इस वक़्त इसी तरह की धारणाएँ दुनिया पर अमलन छाई हुई हैं। हमारे पास सच्चा दीन है, अगर इसे आज के ज्ञानात्मक आदर्श के लिहाज़ से पेश किया जाए तो वह समय अधिक दूर नज़र नहीं आता कि दुनिया से झूठी धारणाओं की अँधयारी छट जाए और सच्चे-दीन का प्रकाश चारों तरफ़ फैल जाए। अगर इस मैदान में हमारी तैयारी मुकम्मल न हुई तो डर है कि हम अपनी कमज़ोर वकालत की वजह से अल्लाह के दीन की सत्यता न साबित कर सके और दुनिया केवल इस वजह से उसे आकर्षण योग्य न समझकर रद्द कर दे कि हमारे पास उसके हक़ में मज़बूत दलीलें न थीं। यह नुक़सान बहुत बड़ा नुक़सान होगा, हमारा भी और पूरी मानव-जाति का भी। दुआ करता हूँ कि अल्लाह इस नुक़सान से हमें सुरक्षित रखे।

